

धनु संक्रांति हिंदू धर्म का एक प्रमुख पर्व है, जो सूर्य के धनु राशि में प्रवेश करने के अवसर पर मनाया जाता है। यह शुभ दिन धार्मिक अनुष्ठानों, दान-पुण्य और सूर्य उपासना के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है, साथ ही यह सकारात्मक ऊर्जा और नई शुरुआत का प्रतीक माना जाता है।

धनु संक्रांति कब है?

धनु संक्रांति **15 दिसंबर 2024** को मनाई जाएगी। यह हिंदू धर्म के प्रमुख पर्वों में से एक है, जो सूर्य के धनु राशि में प्रवेश करने के साथ आरंभ होता है। यह दिन विशेष रूप से शुभ माना जाता है और इसे सूर्य उपासना, दान-पुण्य और धार्मिक कार्यों के लिए महत्वपूर्ण अवसर के रूप में देखा जाता है।

धनु संक्रांति क्यों मनाई जाती है?

धनु संक्रांति को सूर्य के धनु राशि में प्रवेश करने और दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर बढ़ने का प्रतीक माना जाता है। यह दिन विशेष रूप से कृषि, मौसम परिवर्तन, और धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ा हुआ है। सूर्य का उत्तरायण होना आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि यह आत्मा और शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। यह पर्व प्रकाश और नई शुरुआत का प्रतीक है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस दिन भगवान विष्णु और सूर्य देवता की पूजा करने से पापों का नाश होता है और पुण्य की प्राप्ति होती है। यह समय फसल कटाई के मौसम की शुरुआत का भी प्रतीक है, इसलिए इसे किसानों के लिए विशेष महत्व प्राप्त है।

[वृश्चिक संक्रांति](#)

[मीना संक्रांति](#)

धनु संक्रांति का महत्व

धनु संक्रांति का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व अत्यंत गहरा है। यह पर्व सूर्य देव के धनु राशि में प्रवेश और उत्तरायण की दिशा में गमन का प्रतीक है। इसे आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह आत्मा की शुद्धि, सकारात्मक ऊर्जा, और नई शुरुआत का संदेश देता है। धार्मिक रूप से, यह दिन भगवान विष्णु और सूर्य देव की पूजा-अर्चना का समय है, जो पापों के नाश और पुण्य प्राप्ति का अवसर प्रदान करता है। इसके साथ ही, यह दिन मौसम परिवर्तन और कृषि चक्र के आरंभ का प्रतीक भी है, जो किसानों के लिए विशेष महत्व रखता है।

धनु संक्रांति पर क्या करें?

धनु संक्रांति पर कई धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों का पालन किया जाता है। यह दिन पूजा, व्रत, और दान के लिए समर्पित होता है।

1. सूर्य पूजा: इस दिन प्रातःकाल में सूर्य को अर्घ्य देना अत्यंत शुभ माना जाता है। तांबे के पात्र में जल, तिल, गुड़, और लाल पुष्प डालकर सूर्य देव को अर्पित करें। यह प्रक्रिया जीवन में सकारात्मक ऊर्जा और स्वास्थ्य का संचार करती है।

2. स्नान और दान: धनु संक्रांति के दिन पवित्र नदियों में स्नान करने की परंपरा है। यदि ऐसा संभव न हो, तो घर पर ही स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहनें। स्नान के बाद तिल, गुड़, वस्त्र, और अन्न का दान करें। यह पुण्य फलदायक होता है।

3. विशेष भोजन: इस दिन तिल-गुड़ से बने व्यंजन जैसे लड्डू और पायसम का विशेष महत्व है। यह स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है और इसे सर्दियों में शरीर को गर्म रखने के लिए उपयोग किया जाता है।

4. व्रत और पूजा-अर्चना: धनु संक्रांति पर व्रत रखने से आत्मिक शुद्धि होती है। भगवान विष्णु और सूर्य देव की पूजा-अर्चना करें। मंदिरों में जाकर विशेष अनुष्ठान में भाग लें। दक्षिण भारत में भगवान अयप्पा और विष्णु की पूजा का विशेष महत्व है।

5. सामाजिक गतिविधियाँ: इस दिन सामूहिक भोज, भजन-कीर्तन और जरूरतमंदों की सहायता जैसे कार्यों का आयोजन किया जाता है। यह सामाजिक समरसता और भाईचारे को बढ़ावा देता है।

धनु संक्रांति पर क्या न करें?

1. क्रोध और कलह से बचें: इस शुभ दिन पर किसी के साथ झगड़ा या वाद-विवाद न करें। इससे नकारात्मक ऊर्जा का संचार हो सकता है।

2. मांसाहार और नशा न करें: धनु संक्रांति पर मांसाहार और नशे से दूर रहना चाहिए। यह दिन शुद्धता और संयम का प्रतीक है।

3. अलस्य से बचें: इस दिन अलस्य करना अशुभ माना जाता है। सुबह जल्दी उठें और स्नान-पूजन के कार्य करें।

4. अभद्र भाषा का प्रयोग न करें: इस दिन हर किसी के साथ विनम्रता और सम्मान के साथ पेश आएँ। किसी को अपशब्द कहने से बचें।

धनु संक्रांति के लाभ

[धनु संक्रांति](#) केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और सामाजिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत लाभकारी है।

1. आध्यात्मिक शांति: इस दिन पूजा, व्रत, और दान से मन को शांति मिलती है। यह आत्मा की शुद्धि का पर्व है, जो मानसिक तनाव को कम करता है और जीवन में सकारात्मकता लाता है।

2. स्वास्थ्य और पोषण: तिल और गुड़ से बने व्यंजन स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। तिल में मौजूद कैल्शियम और आयरन हड्डियों को मजबूत बनाता है, जबकि गुड़ पाचन तंत्र को बेहतर करता है।

3. सकारात्मक ऊर्जा का संचार: सूर्य उपासना और दान-पुण्य से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह आत्मविश्वास बढ़ाने और जीवन में संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

4. सामाजिक समरसता: इस दिन सामूहिक भोज, जरूरतमंदों की सहायता, और दान-पुण्य से समाज में समानता और भाईचारे का विकास होता है।

धनु संक्रांति एक ऐसा पर्व है जो जीवन में संतुलन, शुद्धता, और नई शुरुआत का प्रतीक है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि समाज में एकता और समरसता को बढ़ावा देने का अवसर भी है। इस दिन सूर्य देव और भगवान विष्णु की आराधना करें, दान-पुण्य में भाग लें और अपने जीवन को सकारात्मकता और शांति से भर दें।

Read More religious content

[Vedic Prayers](#)